कृषि विज्ञान केन्द्र रोहतक

जिला रोहतक के लिए गेहूँ की समग्र सिफारिशें

किस्मों का चुनाव :–

समय की बिजाई तथा कम सिंचाई वाली भूमि के लिए	सी 306, डब्ल्यू. एच. 1025 डब्ल्यू. एच. 1080, डब्ल्यू. एच. 1142(i)
समय की बिजाई व सिंचित भूमि के लिए	डब्ल्यू. एच. 283, डब्ल्यू. एच. 542, पी.बी. डब्ल्यू 550, एच.डी. 2967, एच.डी. 3086, डी.पी. डब्ल्यू. 621–50, डब्ल्यू. एच. 1105
पछेती बिजाई व सिंचित भूमि के लिए	डब्ल्यू. एच. 1021, राज 3765, डब्ल्यू.एच. 1124, डी.बी. डब्ल्यू 90, एच. डी. 3059
कल्लर भूमि के लिए	डब्ल्यू.एच. 157, डब्ल्यू.एच. 283, के. आर. एल. 210

बिजाई का समय तथा बीज की मात्रा :–

उत्पादन स्थिति	बिजाई का समय	बीज दर (कि.ग्रा./एकड़)
सिंचित समय पर बिजाई	नवम्बर का प्रथम पखवाड़ा	40–45
सिंचित, देर से बिजाई	दिसम्बर के तीसरे सप्ताह तक	50–55
वर्षा आधारित व कम पानी	अक्टूबर का आखिरी सप्ताह	50

बीज उपचार :–

- दीमक से बचाव के लिए 60 मि.ली. क्लोरपाइरीफास 20 ई. सी. या 200 मि. ली. इथियोन 50 ई.सी. को दो लीटर पानी में मिलाकर 40 किलोग्राम बीज को उपचारित करें।
- खुली कांगियारी व ध्वज पत्ता कांगियारी से बचाव के लिए बैविस्टिन 2 ग्राम या 1 ग्राम रैक्सिल प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें।
- जैविक खाद उपचार के लिए चार पैकेट एजोटोबैक्टर (प्रत्येक 200 ग्राम) व चार पैकेट फास्फोरस टीका(पी.एस.बी.) प्रति 40 किलो बीज का प्रयोग करें।

बिजाई विधि :–

गेहूँ की बिजाई बीज एवं उर्वरक ड्रिल से करें। बीज की गहराई लगभग 5 से.मी. एवं पंक्ति से पंक्ति की दूरी 20 सेंमी0 होनी चाहिए। पछेती बिजाई में पंक्ति से पंक्ति की दूरी 20 सेमी0 होनी चाहिए। पछेती बिजाई में पंक्ति से पंक्ति की दूरी 18 सेमी0 रखें। धान–गेहूँ फसल चक्र वाले क्षेत्रों में गेहूँ की बिजाई जीरो बीज एवं उर्वरक मशीन से कर सकते हैं।

खाद की मात्रा :–

- मिट्टी की जांच के अनुसार संतुलित खादों का प्रयोग करें।
- सिंचित दशा में क्रमशः शुद्ध नत्रजन, फास्फोरस, पोटाश की मात्रा 60:24:12 किलो.ग्रा. प्रति एकड़ डालें। इसके लिए 50 कि.ग्रा. डी.ए.पी. तथा 110 कि.ग्रा. यूरिया (अथवा 150 कि.ग्रा. सिंगल सुपरफास्फेट तथा 130 कि.ग्रा. यूरिया), 20 कि. ग्रा. म्यूरेट आफ पोटाश प्रति एकड़ डालें।
- नत्रजन की आधी मात्रा व अन्य खादों की पूरी मात्रा तथा 10 किलो जिंक सल्फेट प्रति एकड़ बिजाई के समय डालें। नत्रजन का शेष भाग पहली सिंचाई के साथ दें। रेतीली जमीनों में ये भाग पहली व दूसरी सिंचाई पर आधा–आधा दें।
- दलहनी फसलों के बाद या परती छोड़ने के बाद बोई जाने वाली गेहूँ में नत्रजन की मात्रा 25 प्रतिशत घटाएं।
- गोबर व हरी खाद के उपयोग से गेहूँ की उपज अधिक होती है।
- यदि जस्ते की कमी के लक्षण दिखाई दे ंतो खेत में खड़ी फसल पर एक कि.ग्राम जिंक सल्फेट व 5 कि.ग्रा. यूरिया को 200 लीटर पानी में घोल बनाकर एक एकड़ में छिड़काव करें।

सिंचाई :–

- आमतौर पर गेहूँ की फसल के लिए 4–6 सिंचाईयों की आवश्यकता होती है। पानी की उपलब्धता एवं पौधों की आवश्यकतानुसार सिंचाई करनी चाहिए।
- पहली सिंचाई बिजाई के 20–22 दिन बाद शिखर जड़ निकलने की अवस्था पर बहुत आवश्यक है।
- जहां भूमिगत जल स्तर ऊँचा हो वहां गेहूँ में 1–2 सिंचाईयां (पहली 25 दिन, दूसरी 85 दिन बाद) करें।
- पछेती बिजाई में पहली सिंचाई 25 से 30 दिन बाद दें। अन्य सिंचाईयां हर तीन सप्ताह बाद दें।

समय की बिजाई के लिए सिंचाई तालिका :–

सिंचाई संख्या	पानी की उपलब्धता के अनुसार बिजाई के बाद निम्न दिनों पर सिंचाई दें
1	22
2	22, 85
3	22, 65, 105
4	22, 45, 85, 105
5	22, 45, 65, 85, 105
6	22, 45, 65, 85, 105, 120

सूत्रकृमियों की रोकथाम :–

- टूण्डु व ममनी रोगों से बचाव के लिए प्रमाणित बीज का प्रयोग करें या इसे बिजाई से पहले पानी में डालकर ममनी–रहित कर लें।
- मोल्या के सूत्रकृमि से बचाव हेतु गर्मी (मई–जून) में खेत की 2–3 बार गहरी जुताई करें।
- लगातार गेहूँ की फसल न लेकर सरसों व जौ की मोल्या अवरोधी किस्में जैसे कि बी.एच. 75 व बी. एच. 393 का फसल–चक्र अपनाएं अथवा गेहूँ की मोल्या अवरोधी किस्म राज.एम.आर.–1 बोए।
- मोल्या प्रभावित खेतों में कार्बोफ्यूरान (फ्यूराडान 3जी) 13 किलोग्राम प्रति एकड़ बिजाई के समय डालें।
- गेहूँ की बिजाई अगेती करें व एजेटोबेक्टर, एच.टी. 54 एजोटीके से प्रति पैकेट 10 किलोग्राम की दर से बीजोपचार करें।

खरपतवार नियंत्रण :–

दवाई	मात्रा प्रति एकड़
चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार : बाथू, खरबाथू, मालवा, हिरणखुरी, कृष्णनील, चटरी–मटरी, कड़ाई, मेथा, जंगली पालक, सैंजी, प्याजी, मैणा आदि	
• 2, 4–डी सोडियम साल्ट (80 प्रतिशत) • 2,4–डी एस्टर (34.6 प्रतिशत) • मैटसलफ्यूरोन (एलग्रिप+सरफैक्टैन्ट (सहायक पदार्थ) • कारफेन्ट्राजोन–इथाईल (एफीनिटी) 40 प्रतिशत डी.एफ.	250 ग्राम 300 मि.ली. 8 ग्राम 20 ग्राम
संकरी पत्ती वाले खरपतवार : कनकी, जंगली जई, पोआ, लोम्बड़घास आदि	
• आईसोप्रोटूरान 75 प्रतिशत (एरिलोन, रक्षक, डैलरान) • क्लोडीनाफोप 15 प्रतिशत घु.पा. (टोपिक, मूल्ला, प्वाइंट, टोपल व रक्षक प्लस) • सल्फोसल्फ्यूरान 75 प्रतिशत घु.पा.(लीडर, एस.एफ,–10 सफल–75)+ सहायक पदार्थ • फीनोक्साप्रोप 10 ई.सी. (पूमा सुपर)+ (सहायक पदार्थ) • पीनोक्साडैन 5 प्रतिशत ई.सी. (एक्सियल)	500 ग्राम 160 ग्राम 160 ग्राम 480 ग्राम 400 मि.ली.

दोनों तरह के (चौड़ी व संकरी पत्ती वाले) खरपतवार	
• टोटल (सल्फोसल्फ्यूरान+मैटसल्फ्यूरान, तैयार मिश्रण+सहायक पदार्थ	16 ग्राम
• एटलांटिस (मिजोसल्फ्यूरान, तैयार मिश्रण)+सहायक पदार्थ	160 ग्राम
• वेस्टा (क्लोडीनाफोप प्रोपायर्जिल+मेटसल्फ्यूरान मिथाइल, तैयार मिश्रण)+सहायक पदार्थ	160 ग्राम
• एकोर्ड प्लस (फिनोक्साप्रोप+मैट्रीब्यूजीन, तैयार मिश्रण	500 मि.ली.

आवश्यक निर्देश :–

- उपरोक्त किसी भी एक दवाई को 200–500 लीटर पानी में घोलकर बिजाई के 30–35 दिन बाद प्रति एकड़ के हिसाब से छिड़कें। छिड़काव पहला पानी देने के बाद जब हवा बंद हो तो फलेट–फैन नौजल से करें।
- आइसोप्रोटूरान का प्रयोग धान–गेहूँ फसल–चक्र व कनकी प्रतिरोधी वाले क्षेत्रों में न करें।
- अगर गेहूँ में लीडर, एस.एफ. 10, सफल 75 व टोटल का छिड़काव किया गया है तो गेहूँ कटाई के तुरन्त बाद मक्का, ज्वार, बाजरा व लोबिया की फसल न लें।
- क्लोडिनाफोफ या पीनोक्साडैन, सल्फोसल्फ्यूरोन व फिनोक्साप्रोप के साथ 2, 4–डी, कारफेन्ट्राजोन व एलग्रीप को मिलाकर छिड़काव न करें।
- फसल में प्याजी की समस्या हो तो एलग्रीप का प्रयोग करें तथा मालवा व हिरणखुरी के नियंत्रण हेतु एफीनिटी का ही प्रयोग करें।
- डब्ल्यू एच. 283 किस्म में 2, 4 डी का छिड़काव न करें व एकोर्ड प्लस का प्रयोग पी.बी. डब्ल्यू 550, डब्ल्यू.एच. 542 व डब्ल्यू.एच. 283 में न करें।
- यदि दवाओं का प्रयोग न किया गया हो तो खेत में निराई–गोड़ाई करके खरपतवार निकाल लें। इससे फुटाव अच्छा होगा, जमीन व फसल भी स्वस्थ रहेगी।

पीला रतुआ की रोकथाम :–

पीला रतुआ गेहूँ की फसल को बहुत अधिक हानि पहुँचाता है। इस रोग के लक्षण दिखने पर टिल्ट 25 ई.सी. (प्रोपीकोनाजोल 25 ईं.सी) का 0.1 प्रतिशत घोल बनाकर छिड़काव करें। एक एकड़ के लिए 200 मि.ली. दवा 200 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। रोग का प्रकोप तथा फैलाव को देखते हुए दूसरा छिड़काव 15 दिन के बाद करें।

चेपा नामक कीट की रोकथाम :–

यदि 12 प्रतिशत बालियाँ या सबसे ऊपर के पत्ते पर चेपा के समूह (10 कीट) मिलें तो 400 मि.ली. मैलाथियान 50 ई.सी.को 250 ली. पानी में मिलाकर प्रति एकड फसल पर छिडकें।